रविवार, दिनाँक **17-09-2023** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

**मैं बलिहार बलिहार बलिहार महाबीर जी, तुहाडे चरणाँ तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।**

**मन मेरा बुरा बुरा कोई नहीं, इस मन नू समझाओ बलधार महाबीर जी।।**

**मन मस्त हाथी जिधर चाहवंदा ए, उधर सब भैणां नू लै जावंदा ए।**

**इस मन ते रहो रखवाल महाबीर जी, तुहाडे चरणाँ तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।**

**रस्ता छोड़ सिधा पुठे जावंदा ए, ऐह भैणां नू पिया घबरावंदा ए।**

**इस मन ते रहो हुशियार महाबीर जी, तुहाडे चरणाँ तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।**

**मन उपशम कर देओ मेरा महाबीर, इस ने अन्दर जमा लिया डेरा महाबीर।**

**इस मन नू आप समझावो महाबीर जी, तुहाडे चरणाँ तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।**

**रघुनाथ जी दे चरण भुलावंदा ए, संसार दे वल जल्दी जावंदा ए।**

**इस मन नू आप समझाओ महाबीर जी, तुहाडे चरणाँ तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।**

**मन भुलन हारा भुल जावंदा ए, सानू शहर पर शहर फिरावंदा ए।**

**इस मन नू मार मुकाओ महाबीर जी, तुहाडे चरणाँ तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।**

**रघुनाथ महाबीर जी दे चरणां विच राहवे, ऐह मन किसे पासे न जावे।**

**ऐन्हू गदा दे नाल डराओ महाबीर जी, तुहाडे चरणाँ तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।**

**हथ जोड़ के दासी पुकारदी ए, दिने रातीं ए अर्ज गुजारदी ए।**

**सुन लौ बेनती मेरे बलधार महाबीर जी, तुहाडे चरणाँ तों जावाँ बलिहार महाबीर जी।।**

सजनों इस भजन के अन्तर्गत सच्चेपातशाह जी अपनी मनोदशा सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के आगे व्यक्त करते हुए उनसे बार-बार प्रार्थना करते हैं कि हे सजन श्री

शहनशाह हनुमान जी ! आप मुझ पर इतनी कृपा करो कि मेरा बहिर्मुखी मन अन्तर्मुखी हो, हमेशा परमात्मा में लीन रहे। इस तरह वह जो भी विचार प्राप्त करे, वह परमात्मा से ही प्राप्त करे और फिर उन्हीं सार्थक विचारों को प्रयोग में लाए। यहाँ जानो कि जो भी सुरत उस आद् शब्द संग स्थिरता से बनी रहती है, वह ही उन्हीं सार्थक शब्द ब्रह्म विचारों को प्राप्त कर पाती है लेकिन इस हेतु यत्न करना अनिवार्य होता है। यत्न/त्याग भावना के बगैर तो किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं होती। सो अगर कार्य सिद्ध करना है तो त्याग भावना होनी चाहिए। अगर त्याग भावना नहीं तो इन्सान कदाचित् सफल नहीं हो सकता। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों जो भी अब तक अनीति-संगत भाव स्वभाव अपना चुके हो, उनका त्यागकर शास्त्र विहित विधि-विधान अनुसार अपने भाव-स्वभाव ढाल लो। इस हेतु अब तक जो हुआ सो हुआ, उसे भूल जाओ और आगे से आत्म-नियन्त्रण द्वारा आत्म सुधार करने का दृढ़ संकल्प लो। यदि हक़ीकत में आत्म-सुधार चाहते हो तो अपनी मनोदशा को एकान्त में बैठकर समझने का यत्न अवश्य करो। यहाँ याद रखो कि अगर ख़्याल बार-बार संसार की तरफ जाता है तो हम जो भी सोचेंगे, बोलेंगे, वह संसार के अनुरूप ही होगा। इसके विपरीत यदि हमारा ख़्याल परम अर्थ की तरफ जाता है तो हमारी सोच व बातचीत सब पारमार्थिक शब्द ब्रह्म विचार अनुरूप ही होगी। इस तरह आप अपना निरीक्षण कर सकते हो।

सजनों विचार करो कि जब आप यहाँ से सत्संग सुनकर जाते हो तो क्या फिर उन पारमार्थिक विचारों को दोहराते हो और स्मृति में बिठाने हेतु दिनचर्या के दौरान उनका प्रयोग करने का परिश्रम दिखाते हो या फिर ऐसा करने से सकुचा जाते हो? यह नतीजा सजनों सबने लेना है। ज्ञात हो कि अगर तो हम ऐसा करने में सकुचा जाते हैं तो हमारा आत्म उद्धार नहीं हो सकता क्योंकि जब तक हमारी सोच व बातचीत के तरीके में बदलाव नहीं आता तब तक हमारा मन उपशम नहीं हो सकता। ऐसे में हमारा ख़्याल मनुराज में ही गोते खाता रहता है और अन्दर प्रसन्नचित्तता के वातावरण का निर्माण नहीं हो सकता। नतीजा हम आत्म-विस्मृत में बने रहते हैं यानि मैं क्या हूँ, कौन हूँ ? - यह नहीं जान पाते और अपने सच्चे घर का रास्ता भूल जाते हैं। सच्चे घर का रास्ता भूल जाते हैं तो मिथ्या घर को ही सजाते-सँवारते रहते हैं और अपने जीवन का हर क्षण वृथा गँवा बैठते हैं। इस अथाह नुक्सान की पूर्ति बहुत मुश्किल होती है क्योंकि जीवन तो आगे बढ़ता जाता है। सजनों इसी नुक्सान को होने से रोकना है यानि अपने गिरते हुए ख़्याल को ऊपर उठाने

का प्रयास करना है। जानो इसके लिए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा बख़्शी युक्ति तो आपके पास है ही। उस युक्ति का निरन्तर इस्तेमाल करो। इस तरह घर व संसार के सारे काम भी करते रहो और साथ ही जीवन उद्धार का महान कार्य भी सिद्ध करो। सजनों हम कहते हैं कि एक बार कोशिश तो करके देखो और इस हेतु सच्चेपातशाह जी के वचनानुसार 'हत्थ कार वल चित्त यार वल' रखने की युक्ति प्रवान करो। याद रखो जब चित्त यार वल होता है तो आत्म-साक्षात्कार हो जाता है और हम जान जाते हैं कि हक़ीकत में हम कौन हैं।

सजनों जानो कि हम त्रिलोकी के मालिक हैं और यह त्रिलोकी हमारी है। यही हमारी असली शान है। अब सब जान-समझकर भी मैं अपनी इस महान शान से गिर जाऊँ तो यह अपने आप में भारी नुक्सान करने की बात है। इस बात को समझते हुए सजनों हम तो यही कहेंगे कि इस नुक्सान को प्राप्त करना महामूर्खता यानि दुःखों को प्राप्त होने की बात है। ऐसा मत करो अपितु आत्म-स्मृति में आकर इन समस्त दुःखों का निवारण करो। जानो उसकी एकमात्र युक्ति है यही कि सब कार्य-व्यवहार करते हुए मन को सदा प्रभु में लीन रखो। जानो सत्संग यह नहीं कहता कि संसारी काम-काज मत करो। सब काम करो और सबके प्रति अपना कर्त्तव्य समय पर कुशलता से निभाओ पर उसी के साथ-साथ जगत में इधर-उधर बिखरे हुए अपने ख़्याल को संसार की तरफ से हटाकर आत्म-स्वरूप में भी साधो। इस तरह अपने सच्चे घर में स्थित हो जाओ। मात्र आत्म-नियन्त्रण करने का पुरुषार्थ दिखाने पर ही जीवन आनन्द से भर जाएगा। तब आपको बहुत अच्छा लगेगा, चेहरा खिला हुआ नजर आएगा, हृदय प्रफुल्लित रहेगा और आप सबको बड़े सुन्दर लगोगे। फिर कह रहे हैं कि वैचारिक रूप से कुरूप मत बनो अपितु स्वच्छ व सुन्दर बनो। आशय यह है कि जो भी विचार मन में उठे, वह स्वच्छ व सार्थक होने चाहिए। आज से यही करने का प्रयास आरम्भ कर देना। अब आगे ध्यान से सुनोः-

**(श्री साजन जी के मुख के शब्द)**

**अदल बदल हो रही है दुनियां कैसे समझा रहे समझा रहे श्री कृष्णचन्द्र भगवान।**

**जपो भगवान, जपो भगवान जिन्हुं सिमरे कुल जहान जपो श्री कृष्णचन्द्र भगवान।।**

ओ ओ ओ मुख में कैसे मुरली साजे हथ चक्र सुदर्शन आहा हथ चक्र सुदर्शन वाह वाह।

संख चक्र गदा पद्मधारी नटवर ओही जान  जपो भगवान, जपो भगवान।।

सच नू धारण करके जेहड़ा सच कमावे बेखौफा, बेख़तरा, बेडर ओ हो जावे।

निर्भय, निर्वैर ओन्हु मिले त्रिलोकी दी कुर्सी।।

कैसा ओ चमक रिहा, चमके ओ सुजान, जपो भगवान, जपो भगवान।

जपो भगवान, जपो भगवान जिन्हुं सिमरे कुल जहान जपो श्री कृष्णचन्द्र भगवान।।

सुगम रस्ता ओ धारण करके अगम अगोचर पावे।

बिन किश्तियों बिन बेड़ियों बिन जहाज़ों पार हो जावे।।

निर्भय, निर्वैर ओन्हु मिले विश्रामी पलंग।।

कैसा ओ चमक रिहा, चमके ओ महान, जपो भगवान, जपो भगवान।

जपो भगवान, जपो भगवान जिन्हुं सिमरे कुल जहान जपो श्री कृष्णचन्द्र भगवान।

शक्ति नू धारण करके जेहड़ा शक्ति नू चमकावे।

बिन हथियारों बिन तीरों बिन तलवारों जय ओ पावे।।

निर्भय, निर्वैर ओन्हु मिले अनमोल सिंहासन।

हीरे रत्न जड़त ताज ओहदा जान, जपो भगवान, जपो भगवान।

जपो भगवान, जपो भगवान जिन्हुं सिमरे कुल जहान जपो श्री कृष्णचन्द्र भगवान।।

निष्काम नूं धारण करके जेहड़ा निष्काम हो जावे।

बिन औखियाईयों, बिन खेचलों, बिन तकलीफ़ों पार हो जावे।।

निर्भय, निर्वैर ओ ऐसे पद नू पावे।

ओ चमक रिहा, चमके कुल जहान, जपो भगवान, जपो भगवान।

जपो भगवान, जपो भगवान जिन्हुं सिमरे कुल जहान जपो श्री कृष्णचन्द्र भगवान।।

**निर्वाण पद नू पाय के जोती नाल जोत हो जावे।**

**बिन फुरनियों बिन सूरजों सर्व प्रकाश हो जावे।।**

**ओ चमके सचखण्ड ब्रह्माण्ड, ओ सर्व सर्व ही जान, जपो भगवान जपो भगवान।**

**जपो भगवान, जपो भगवान जिन्हुं सिमरे कुल जहान जपो श्री कृष्णचन्द्र भगवान।।**

यह कीर्तन सुनने के बाद सजनों हमें समझदारी में आ जाना चाहिए क्योंकि इस कीर्तन में स्पष्टता से कुदरत का यह सन्देश दिया गया है कि इस सृष्टि में बहुत बड़ा बदलाव आने वाला है यानि कलियुग जाने वाला है और सतयुग आने वाला है। इस बात को दृष्टिगत रखते हुए अपना व सबका बचाव सुनिश्चित करने हेतु हमारे लिए बनता है कि हम आत्मिकज्ञान प्राप्त कर सतवादी बन जाएँ। जानो ऐसा करने से झूठ से आज़ादी मिल जाएगी। वैसे भी झूठ बोलना कोई अच्छी बात नहीं होती। झूठ तो वही बोलता है जो डरपोक होता है व जिसके पास आत्मिकज्ञान नहीं होता। ऐसा इन्सान तो नकलची होता है क्योंकि वह सत्य-असत्य में भेद नहीं कर पाता। यहाँ अपनी जाँचना करो कि आप किस गणना में आते हो?

अगर तो सजनों आत्मिकज्ञान प्राप्त कर सतवादी बनना चाहते हो तो जानो कि सतवादी धर्म के रास्ते पर सीधा चलता है। इस तरह वह इस जगत के सब कार्य-व्यवहार समयबद्ध करते हुए निर्वाण पहुँच विश्राम को पाता है। आप भी यदि यह बदलाव चाहते हो तो आत्मिकज्ञान प्राप्त कर सत्य को धारण करो। ऐसा करने से कामुक भाव समाप्त हो जाएँगे और आप निष्काम हो जाओगे। निष्काम हो गये तो निष्काम पद प्राप्त कर लोगे। जानो निष्कामी ही निर्विकारी होता है और वही निर्वाण पद प्राप्त कर प्रकाश नाल प्रकाश हो परमात्मा से मेल खा जाता है।

आप भी सजनों परमात्मा से मेल खाने हेतु आत्म-निरीक्षण व आत्म-नियन्त्रण करना सीखो। इसी से काम सिद्ध हो जाएगा और जीवन बन जाएगा। तो हिम्मत दिखाओ, हिम्मत दिखाओ और समय रहते ही अपना जीवन उद्धार कर लो। इस हेतु जो हमारा सच्चा यार

है उसको लोचो, उससे यारी लगाओ, दुनियाँ से यारी मत लगाओ अपितु दुनियावी फ़र्ज हँसकर निभाओ। यही इस द्वारे की नीति है। अब ध्यान से सुनोः-

**अरशी यार**

**जिस यार नाल मैं यारी लाई**

**ओ अरशी यार बड़ा है अनोखा।**

**प्यार दा है ओ महरम सजनों**

**कदे वी नहीं देंदा धोखा।।**

**जेहड़ा ओहदा संग स्वीकारे**

**ओ हो जांदा है जे सौखा।**

**फिर चाहे ओ जगत विच विचरे**

**कदे नहीं खांदा धोखा।।**

**मेरा यार है सब दा साँझा**

**जो भी चाहे ला लवे यारी।**

**जितनियाँ वी हैंन सुरतां जगत विच**

**हर सुरत ओन्हूं लगदी है प्यारी।।**

**जिस सुरत नूं मेरा अरशी यार अपनाए**

**ओ तां सीधी परमधाम नूं जाए।**

**रूप रंग रेखा मिट्दयां**

**ओ परम आनन्द नूं पाए।।**

**ते अनंत-बेअन्त खुशियाँ मनाए,**

**नाले नचे ते नाले गाए।**

**मैं जो था अब वो नहीं**

**वो जो है अब मैं वही.....मैं वही....अब मैं वही।।**

सजनों इस तथ्य को जानो व पहचानो कि आत्मा-परमात्मा में कोई फ़र्क नहीं है इसीलिए अपनी सुरत को शब्द, जो कि आद् अक्षर है उसमें मिला लो और अपना दर्शन पा लो। ऐसा होने पर समझ आ जाएगी कि जो वह है मैं भी वही हूँ। इस तरह सब जप-तप-संयम से आज़ाद हो जाओगे और बुद्धि टिकाणे आ जाएगी। तब सतवस्तु का राज करना सम्भव हो जाएगा। यह है आत्मोद्धार का तरीका। सो हिम्मत दिखाओ, हिम्मत दिखाओ और अपने आप को परमात्मा से अलग मत समझो। इस तथ्य को सजनों जानो व पहचानो। शरीरों के पीछे मत भागो अपितु सद्बुद्धि हो जाओ और अपने यथार्थ स्वरूप को पहचान कर सर्व एकात्मा का दर्शन कर लो व एकता, एक-अवस्था में आ जाओ। जानो यही जीवन विजय का तरीका है।

आप इस विजय को प्राप्त करने में सफल हों, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ सभी सजनों को जय सीताराम जी।